# संवाद

विद्यार्थी के जीवन के प्रारंभिक वर्ष उसके संपूर्ण जीवन के निर्धारक होते हैं। इस दौरान वह जो कुछ भी देखता है, सीखता है, वह अनुकूल वातावरण के प्रभाव से स्थायी होता जाता है। अतः यह परिवार, विद्यालय एवं समाज का दायित्व है कि बच्चों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो तथा भविष्य स्थिर एवं सुदृढ़ हो। बच्चे स्वभाव से ही बहुत चंचल व चुलबुले होते हैं। इस चंचलता के कारण ही उनसे कक्षा अथवा कक्षा के बाहर भी कुछ गलतियाँ हो जाती हैं। अभिभावक व शिक्षक को चाहिए कि वे बच्चे की गलती पर गुस्सा होने या उन्हें दंड देने के बजाए उनके साथ वार्तालाप करें। समय-समय पर उन्हें ज़िम्मेदारियाँ दें, इससे वे ज़िम्मेदार बनेंगे।

शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला है। विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण की निर्माणशाला है और शिक्षक निर्माता है। यही कारण है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षक की आवश्यकता सदैव बनी रहती है। बच्चे में अध्ययन के प्रति रुचि जागृत करना, उसके क्रियाकलापों में निरंतरता लाना, दिनचर्या को नियमित व व्यवस्थित करवाना और विद्यालय हेतु आकर्षण उत्पन्न करना आदि शिक्षक के महत्वपूर्ण कार्य हैं। यह ज़रूरी है कि हम बच्चों के समक्ष एक आदर्श छवि का निर्माण करें और उन पर विश्वास करें। यह परिवार, शिक्षकों और समाज की ज़िम्मेदारी है कि उन्हें बेहतर अवसर प्रदान कराएँ, ताकि उनकी प्रतिभा का विकास हो सके और समाज लाभान्वित हो सके।

विद्यालय में विद्यार्थियों को विभिन्न विषय पढ़ाए जाते हैं, परंतु बच्चे गणित विषय में कई बार अपेक्षित स्तर को प्राप्त नहीं कर पाते और वे गणित विषय से डरने लगते हैं जबकि प्रारंभिक स्तर का गणित सभी के लिए आवश्यक होता है। अतः इस अंक में हम आपके साथ प्रारंभिक स्तर के गणित विषय के सीखने के प्रतिफल साझा कर रहे हैं।

*अकादमिक संपादक*